समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 18 पृष्ठः– 4 अंक :– 42 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

जानलेवा प्रदूषण

– डॉ. किशन कछवाहा

कितना प्रदूषण ? तरह –तरह के प्रदूषण। आम आदमी जाने अनजाने परेशान है। वायु प्रदूषण जल प्रदूषण, ध्वनिप्रदूषण और प्रकाश प्रदूषण भी। ये सब सेहत के लिये बड़े खतरे है। सर्वेक्षण जारी हैं – सेहत के साथ खिलवाड़ भी। मोबाईल आदि विविध सुविधाजनक सामग्रियों के आ जाने से इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रानिक ई–कचरा भी प्रदूषण की खतरनाक बजह बन चुका है। मोबाईल तकनीक ने रेडियेशन से होने वाले खतरे की ओर भी ध्यान आकर्षित किया है। यह भी प्रदूषण वृद्धि का एक बड़ा कारण बन गया है। इससे भी मानव ही नही वरन् पशु–पक्षी और फसलों तक बुरा असर पड़ना संभावित है। मोबाईल फोन के एंटीना से निकलने वाली रेडियों तरंगे यद्यपि दिखलायी तो नही देती लेकिन वे बुरी तरह अपना प्रभाव छोड़ ही रही है। इस विषय के विशेषज्ञ उन खतरों को जानते हैं। इसी प्रकार प्रकाश से होने वाला प्रदूषण भी मनुष्य से लेकर पशुओं, कीटों, मछलियों, चमगादरों सहित चिड़ियों ही नहीं बरन पेड़,पौधों को भी बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। विगत दिनों' जर्मन रिसर्च सेंटर फार जिया साईसेज' के शोधकर्ताओं ने चेतावनी दी थी कि प्रकाश प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। इस पर यदि शीघ्र नियंत्रण नही लगाया जा सके तो मनुष्य पशु और पेड़ – पौधों का जीवन चक्र पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। इस प्रदूषर्ण से इन्सान, पशुओं एवं पक्षियों की नींद लेने की प्रकृति जन्य प्रक्रिया प्रभावित होती है। अन्य प्रदूषणों की तरह यह प्रदूषण भी औद्योगिक विकास की देन है ? इसका असर घनी आबादी वाले क्षेत्रों में अधिक है जहॉ जगमगाहट ज्यादा होती है।

वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण को लेकर हमारी चिन्ता का दायरा बढ़ा तो है लेकिन अभी आवश्यक और जरूरी कदम उठाने है। जो उपाय काम में लाये जा रहे है, वे अभी भी नाकाफी है। बन कट रहे है, खनिज पदार्थों की बेरहमी से लूट जारी हैं। पर्वत, नदी, जंगल, समुद्र सभी मानव की अति लालसा के कारण दोहन से बचे नही रह सके हैं। इनके सुव्यवस्थित रखे बिना, जीवन के अस्तित्व को कैसे बचाये रखा जा सकेगा ? इनमें जो विषैला पन घुलता जा रहा है, उससे आम आदमी को सचेत करने् की बड़ी आवश्यकता है। आज से पॉच सौ साल पहले गोस्वामी तुलसीदास जी महराज ने रामचरित मानस में कहा है– क्षिति,जल पावक, गगन समीरा। पंच रचित अतिअधम शरीरा ''। आज हमारे शरीर को संतुलित बनाये रखने वाले इन तत्वों को स्वस्थ एवं अनूकूल रख पाना कितना कठिन हो गया है। ग्लोबल वार्मिंग, बिगड़ता मौसम चक्र, भूस्खलन, भूकम्प और क्रमशः विलुप्त होती जा रही जीवों की प्रजातियॉ– ये सब धटनायें– परिणाम सामने हैं। इनके सामने आदमी कितना बौना साबित हो रहा है। कभी – कभी तो त्राहि त्राहि मच जाती है। पर्यावरण प्रदूषण दम धोटने वाली प्रदूषित हवा से लेकर अशुद्ध पेय जल कितना खतरनाक है, जो युद्ध और हिंसा से भरने वालों की संख्या से भी ज्यादा लोगों को मौत के मुॅह में ले जा रहा है। कब जागेंगे हम ? प्रदूषण जनित बीमारियों में होने वाला खर्च भी बहुत अधिक है। ऑकड़े भयावह हैं। हमें यह पता नहीं है कि अन्धा धुन्ध विकास की दौड़ में हम कितना नुकसान उठाते जा रहे हैं। वायुप्रदूषण ने दिल्ली महानगर को लेकर चिन्तित जरूर कर दिया है, लेकिन इसकी भयावहता से क्या अन्य धनी आबादी वाले शहर बच पर रहे हैं। ? 168 शहरों का सर्वेक्षण हुआ है, वह अत्यन्त कठिन परिस्थिति की ओर संकेत करता है।

(भारतीय दृष्टि)

भारत लगभग पॉच हजार वर्षों से पर्यावरण की सुरक्षा की दिशा में जागरूक रहा है। पर्यावरण संरक्षित तो जीवन सुरक्षित''। रामायण कालीन ग्रन्थों में जड़–चेतन सभी तत्वों को चेतना सम्पन्न माना जाता रहा है। महाभारत कालीन मनीषियों ऋषि–मुनियों ने भी पर्यावरण की गौरव–गरिमा को खुले दिल से स्वीकारा है। शताब्दियों पहले भारत ने पृथ्वी के प्रति अपनी उच्च स्तरीय आदरभावना कुछ इस तरह व्यक्त की थी –

'' सागर तुम्हारी भेखला,
पर्वत तुम्हारे वक्ष हैं,
मॉ वसुन्धरे, मैं तुम्हारा नमन करता,
चरण से करता, तुम्हारा स्पर्श जो,
उसके लिये कर दो क्षमा।''

पृथ्वी पर हमारा जीवन अच्छे पर्यावरण पर निर्भर है। लेकिन लगातार लापर वाही व अनदेखी के कारण जल और वायु को काफी मात्रा तक प्रदूषित कर चुके है। अब स्वच्छ जल और वायु के लिये कुछ भी कीमत चुकाने बाध्य है। भविष्य कैसा होगा–यह कहना कठिन है। ध्वनि प्रदूषण को लेकर भी कतिपय आधार भूत मानक सुनिश्चित किये गये है लेकिन उनका पालन नही होता। ध्वनि प्रदूषण से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित है, लेकिन शोर की परवाह किये बगैर वह अपनी दिनचर्या पूरी करने में लगा रहता लेकिन उस प्रदूषण के कारण कान, और मस्तिष्क बुरी तरह प्रभावित होते है। कभी – कभी तो जानलेवा भी साबित हो जाते है। शादी, विवाह या त्यौहारों होली–दशहरा दीवाली तक सीमित नही रहा यह रोग। रोजमर्रे की जिंदगी का अहं हिस्सा बन गया है। मैच जीतने की प्रक्रिया के दौरान भी कान फोडू बमों का इस्तेमाल किया जाता है। बड़े बड़े शहरों का यातायात, हवाई अडडे, औद्योगिक इकाईयों का शोर क्या नजरअंदाज किया जा सकता है। इससे कितना मनुष्य को जीव – जन्तुओं को नुकसान उठाना पड़ता है, उसका आकलन करना कठिन है। ध्वनि विशेषज्ञों के अनुसार अनुसंधानों से यह तथ्य सामने आया है कि एसे युवाओं की संख्या बहुत अधिक है जो ध्वनि प्रदूषण की चपेट में आने के कारण टिनोटिस नाम की समस्या से ग्रसित है। यह पहला और आरंभिक लक्षण है जिसे बहरेपन का गंभीर खतरा माना गया है। डब्लू.एच.ओ 2017 की रिपोर्ट के अनुसार विश्व के लगभग पॉच प्रतिशत से अधिक लोगों को ध्वनि प्रदूषण के कारण कम सुनने की समस्या को झेलना पड़ रहा है। लगातार मोबाईल पर बात करने से भी यह समस्या बढ़ रही है। मोबाईल तकनीक रेडियेशन के दुष्प्रभाव को भी बढ़ाने अपना योगदान दिया है जिसकी ओर कम ध्यान जा रहा है। इस रेडियेशन के कारण सम्पूर्ण प्रकृति और पशु–पक्षी भी प्रभावित है। इस भयानकता की ओर बढ़ रही हमारी जीवनी पर प्रख्यात वैज्ञानिक ऊल्वर्ट आईस्टीन के इस कथन को याद कर लिया जाना चाहिये। उन्होंने कहा था कि '' मधुमक्खियॉ मानव जीवन के लिये इतनी आवश्यक है कि यदि किसी कारण से धरती से मधुमक्खियों की जीवन समाप्त होता है तो चार वर्ष के भीतर ही मानव जीवन भी समाप्त है। जायेगा। '' इस संदर्भ में रेडियेशन के खतरे का समझ लिया जाना चाहियें। इस

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

श्री नर्मदा जयंती के लिये विशेषलेख

मध्यप्रदेश की जीवन रेखा - मॉ नर्मदा

– डॉ. किशन कछवाहा

मॉ नर्मदा मानव सभ्यता के प्रकट होनें वाले उन दिनों की मानव गति विधियों एवं अनुभूतियों की मूक साक्षी है जिसे पाषाण – संस्कृति के विशेषज्ञों द्वारा की गई खोजों से समझा जा सकता है। पुरातन संस्कृत रचना ''भवानी तंत्र'' में नर्मदा की जीवन दायिनी शक्ति का उल्लेख है वशिष्ट ऋषि ने इसे 'दिव्यरूपा' नदी कहा था – दिव्या नदी बने तन्न विश्रूता–भुवनत्रये। नर्मदा का एकनाम रेवा भी है जिसका संस्कृत में अर्थ होता है उछलना–कूदना। पौराणिक आख्यानों में इसे प्रलय के प्रभाव से मुक्त तथा कुमारी माना गया है। कुमारी होकर भी उन्हें नर्मदा मैया कहा जाता है।

मॉ नर्मदा की उद्गम स्थली है अमरकंटक ।अमरकंटक से तात्पर्य है जीवन के समस्त कटकों को समाप्त कर मंगलमय शाश्वत जीवन की इंगित करने वाला मोक्ष प्रदाता स्थल । नर्मदा ने अमरकंटक के अपने सूक्ष्म स्वरूप को क्रमशः विराट में परिवर्तित करते हुये मानों भनुष्य जाति को यह संदेश दिया है कि उसमें भी अपने स्वरूप का विस्तार करते हुये विराट स्वरूप प्राप्त कर लेने की क्षमता है।

गंगेच यमुने चैव गोदावरी, सरस्वती नर्मदे, सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् –सन्निधिं कुरू।।

इस श्लोक से स्पष्ट्र है कि पावन श्री नर्मदा की गणना देश की प्रमुख सात नदियों में की जाती है। मान्यता है कि लाखों–करोड़ो देवता और दानव मॉ नर्मदा की आराधना करते रहे हैं। वशिष्ट पिप्लाद आदि ऋषिगण–अर्चना में संलग्न रहे। श्री नर्मदा अष्ट कम् में उत्कृष्ट वर्णन निहित है। अद्वैत दर्शन के संस्थापक आदि शंकराचार्य महाभारत ने पापनाशनी निरूपित किया है। भारत के हदय स्थल मध्यप्रदेश के शहडोल जिले की मेखला पर्वतमाला में 1057 मीटर की ऊँचाई पर अमरकंटक से निकलने वाली यह नदी मध्यप्रदेश, गुजरात के टेढ़े–मेढ़े मार्गो से 1312 किलोमीटर की यात्रा पूरी करती है। यह उत्तर ओर दखिण भारत के मध्य एक रेखा खींचती है। महाकाव्य, पुराण इसकी जीवन दायी शक्ति की मनोहारी व्याख्या करते है। जबलपुर नगर से 22 किलोमीटर की दूरी पर संगमर्मरी छटा विखरेता भेड़ाघाट नामक स्थान है, जहॉ धुँआधार का मनोरम हश्य अपनी और आकर्षित करता है। प्रख्यात कवि श्रीधरपाठक कहते है, '' प्रकृति यहॉ एकान्त बैठि निज रूप सॅवारि।'' नर्मदा का हर कंकड़ शंकर है– इस महान आस्था को संजो कर रखा गया है अनादि काल से।

''जय रेवा मेकलसुता, जयति नर्मदा मात। जय मुदली सोमोद्भवा जय त्रिकुटा अवदात।।

कही पाताल को छूती गहराई, कही मैदानी क्षेत्र, अमरकंटक में कपिलधारा, दूधधारा, मंडल में सहस्त्रधारा, भेड़ाघाट में धुँआधारा, वरमान में सत्धारा (सप्तधारा) ऑकारेश्वर में धारा आदि। धर्म ध्वजा भी विलक्षण–स्मरण, दर्शनमात्र से जन्म–जन्मान्तरों के पाप कट जाये। पग–पग पर तीर्थ स्थला ''नर्मदेत्वं महामागा,सर्वपाप हरीभव''

पुण्यसलिला नर्मदा के उद्गम स्थल अमरकंटक से तनिक दूरी पर स्थिल मंडला नगर अपने धार्मिक महत्व के साथ साथ आदि शंकराचार्य के गुरू गौड़पादाचार्य की तपोभूमि, मंडन मिश्र जैसे तपोनिष्ठ विद्वान की कर्मभूमि–जन्मभूमि के रूप में विख्यात है। यही शंकराचार्य और उनके बीच शास्त्रार्थ हुआ था। नर्मदा के दोनों तट भारतीय संस्कृति के समन्वय के द्योतक हैं। मृगु, अंगिरा, व्यास, अगस्त्य, वशिष्ठ, परशुराम आदि महान ऋषियों के बाद कविकुल गुरू कालिदास ने नर्मदा का स्तुतिगान किया है। यह मौगोलिक तथ्य उल्लेखनीय है कि नर्मदा तब भी बहती थी जब गंगा का अस्तित्व नही था। नर्मदा एक विशाल एवं चिरस्थायी नदी है जिसके तटपर कई स्मरणीय घटनायें घटी है। भारत की पौराणिक एवं ऐतिहासिक गाथाओं में इस पावन नदी का विशिष्ट स्थान है। राजा सहस्त्रवाहू की दो प्रतिमायें मण्डला के राजराजेश्वरी मंदिर में स्थापित है। सहस्त्रवाहू की जन्मतिथि कार्तिक त्रयोदशी से पूर्णिमा तक मण्डला में अनादिकाल से भरने वाला मेला इसी और संकेत देता है। हजारों की संख्या में कल्चुरी राजाओं के मंदिर तथा मग्नावशेष स्थल उस प्रख्यात गाथा का संकेत तो देते ही है। अतीत में नर्मदा के किनारे इतिहास और संस्कृति ने अनेक करवटे ली हैं। वर्तमान में विकास ने अनेक मंजिलें भी तय की हैं। यह वरदानी नदी है जिसके जल में काष्ठ, अस्थियों एवं वनस्पतियों को पाषाण में बदल देने की चमत्कारिक शक्ति निहित है।

मानव संस्कृति के संपोषण में भगवती मॉ नर्मदा का अपार एवं स्तुत्य योगदान है। गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, छिप्रा गोदावरी, कावेरी जैसी पावन नदियों के तट के आकर्षण ने ही संतो एवं प्रवुद्धजनों को आकर्षित किया है परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण विश्व को अपने ज्ञान से आलोकित करने वाली सनातन संस्कृति ने जन्म लिया। वर्तमान समय में युवाओं के लिए मॉ नर्मदा के दो विलक्षण संदेश है – पहला यह कि जो कठिन मार्ग चुना है, पहाड़ जंगल चटटानें, कितना संघर्ष करना पड़ा है, आगे बढ़ने के लिये। यही संदेश कि संघर्ष – कठिनाईयों से डरो नही आगे बढ़ते चलो। दूसरा संदेश यह कि खेतों, खलिहानों मनुष्यों, पशुओं की प्यास बुझाते मॉ निस्न्तर आगे बढ़ी है। दूसरों के लिये है यह जीवन अपने स्वार्थ के लिये इस जीवन के क्षणों को नष्ट न करें। डॉ सांख = लिया तथा डॉ. वाकणकर के द्वारा किये गये उत्खननों से यह सिद्ध हो गया है कि नर्मदा घाटी आदिमानव का पसंदीदा बसेरा रहा है। भारतीय वागमय के श्रेष्टतम पुराणों में मॉ नर्मदा की यशो गाथा का उल्लेख मिलता है। उनमें स्कन्द रेखाखंड, विष्णु, मत्स्य, वराह, पझ कूर्म, ब्रम्ह, वायु, अग्नि, मार्कण्डेय वृहन्नारदीय, श्रीमद्भा गवत और देवी पुराण, शिव, वासन और काल्क पुराण शामिल है पुराव्यें के अतिरिक शतपथ ब्राम्हण शमायक,महाभारत वशिष्ट संहिता, वृहत–संहिता, ध

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

लालू यादव को जेल में 93 रूपये रोज मिलेंगे

नौ सौ करोड़ का चारा घोटाला लालू प्रसाद यादव सहित सोलह लोगों के खिलाफ अदालत ने फैसला सुना दिया। लालू यादव देश के बड़े नेता हैं और बिहार में तो उनकी तूती बोलती है। उनके खिलाफ साढ़े तीन साल की सजा और पॉच लाख का जुर्माना अदालत ने ठोंका है।

अभी और फैसले आने वाकी है। यह मामला चारा घोटाले में देवघर कोषालय से करीब नब्बे लाख रूपये की अवैध निकासी से सम्बंधित है। इस घोटाले से जुड़े हुये बिहार के विभिन्न कोषागारों से अवैध रूप से हुयी धन निकासी के मामलो मे फैसले आना बाकी हैं।

चार साल पहले चाईवासा कोषागार से अवैध ध ान निकासी का दोषी मानते हुये अदालत ने पॉच साल की कैद की सजा और पचीस लाख रूपये जुर्माने की सजा सुनायी थी, जिसमे दो महीने जेल में रहने के बाद उन्हें सर्वोच्च न्यायालय से जमानत मिल गयी थी।

इन फैसलों से देशभर में यह सन्देश जरूर गया होगा कि अपराधी कितना भी दबंग और रसूखदार हो, वह कानून से बाहर नहीं है।

यद्यपि यह बात छिपी नहीं है कि चारा घोटाले में लालू यादव ने षड़यंत्र कारियों और साक्ष्यों को मिटाने के लिये भरपूर कोशिशें की थी। फाइलों में छेड़छाड़ हुयी, सबूतों को इधर – उधर किया गया। इतना ही नही अदालत को भी गुमराह किया गया।

इतने पर भी आरोप लगाये जा रहे है कि उन्हें साजिशन फसाया गया है।

जेल प्रशासन कैदी के रूप में लालू यादव से माली काम करायेगा जिसपर 93 रूपये रोज मिलेगे। अभी बिरसामुंडा जेल मे बंद लालू यादव के चारा घोटाले के एक अन्य मामले में (चाईवासा कोषागार से 35 करोड़ 62 लाख रूपये के गवन) फैसला आना बाकी है। उसमे भी बहस पूरी हो चुकी हैं ।

क्या तुम मेरे समान शक्ति नहीं चाहतीं ? कहकर ऑधी अपनी छोटी बहन मंदवायु की ओर देखने लगी। कुछ उत्तर न पाकर वह फिर कहने लगी, ''देखो जिस समाय मैं उठती हूँ, उस समय दूर–दूर तक लोग तूफान के चिंहों से मेरे आने का संवाद चारों और फैला देते हैं। समुद्र के जल के साथ ऐसा किलोल करती हूँ कि पानी की लहरों को पर्वत के समान ऊपर उछाल देती हूँ। मुझे देखकर मनुष्य अपने घरों में घुस जाते हैं। पशु–पक्षी अपनी जान बचाकर भागते फिरते हैं। कमजोर मकानों के छप्परों को भी उड़ा फेंक देती हूँ, मजबूत मकानों को पकड़कर हिला देती हूँ। मेरी सॉस से राष्ट्र–के–राष्ट्र धूल में मिल जाते है। क्याा तुम नही चाहतीं कि तुम नही चाहती कि तुममें भी मेरे समान शक्ति आ जाए। यह सुनकर वसंत की मंदवायु ने कुछ उत्तर न दिया और अपनी यात्रा पर चल पड़ी। उसको आते देखकर नदियॉ,ताल,जंगल,खेत सभी मुस्कराने लगे। बगीचों में तरह – तरह के फूल खिल उठे। रंग– बिरंगे फूलों के गलीचे बिछ गए। सुगंधि से चारों ओर का वातावरण भर गया। पक्षीगण कुंजों में आकर बिहार करने लगे। सभी का जीवन सुखद हो गया। इस तरह से अपने कार्यो द्वारा वसंत वायु ने अपनी शक्ति का परिचय ऑधी को करा दिया। महामानवों का जीवनक्रम भी वसंत की मंदवायु के समान सुरभि–सौदर्य–प्रसन्नता चारों ओर फैलाने वाला होता है। वे पराक्रम में नहीं, सौजन्य में महानता देखते हैं, इसी कारण वे सर्वत्र पूजे जाते है।

जो जज अपनी पूरी नौकरी में अपने सामने बैठे रीडर और मुंशी को रिश्वत लेने से नही रोक पाता, उससे देश की जनता सुधार लाने की उम्मीद कैसे कर सकती है ?

भारत का संविधान

एक प्रमुख संविधान वेत्ता का कहना है कि यदि आप तीन ब्रिटिश दस्तावेजों 1935 का भारत सरकार एक्ट, 16 मई 46 का कैबिनेट मिशन प्लान और 1947 में ब्रिटिश संसद द्वारा पारित भारतीय स्वाधीनता एक्ट को सामने ले तों आप पायेंगे कि संविध ान का तीन चौथाई भाग इन तीन दस्तावेजों से लिया गया है।

पृष्ठ क्रं. 1 का शेष भाग

रेडियेशन के खतरे से मधुमक्खियॉ का जीवन भी सुरक्षित नही रह गया है क्योकि कि मोबाईल टावर्स से निकलने वाली इलेक्ट्रों मेग्नेटिक रेडियेशन की किरणें न केवल मनुष्यों पर बल्कि संपूर्ण प्रकृति पर अपना बुरा प्रभाव छोडत्र रही है।

(समुद्री प्रदूषण)

कूड़ा – कचरा केवल जमीन के लिये ही नही वरन् समुद्र के लिये भी एक बड़ा खतरा बनता चला जा रहा है। विश्व भर में प्रतिवर्ष 14 हजार पाऊंड कचड़ा सागरों में बहाया जाता है। इस कचरे की वजह से समुद्री जीव जन्तुओं और पेड़ – पौधों के अस्तित्व पर खतरा मॅडराने लगा है। प्लास्टिक कचड़ा स्वतः नही हो सकता, कीड़े या जन्तु उसे खा नही सकते। अतः प्रकृति चक्र उससे दुष्प्रभावित हुये बिना कैसे रहेगा ? अचानक आयी समुद्री हलचले भी इसका स्मरण बनी हुयी है।

(प्रदूषित नदियॉ) नदियों का पानी भी समुद्र में भेजाता है। 70 प्रतिशत देश की नदियों का जल प्रदूषण की आखिरी सीमा को पार कर चुका है। केन्द्र द्वारा गंगा सफाई का अभियान चलाया रहा है। जमुना पर प्रश्न वाचक चिन्ह लगा हुआ है। अनेकों नदियों वद से बरतर स्थिति में पहुँच चुकी है। इन नदियों के किनारे बसे लगभग 350 महानगरों को उसका दुष्परिणाम भुगतान है। इस जल प्रदूषण की समस्या के साथ साथ घटते जलस्तर की आहटें भी मिलना शुरू हो गयी है। प्रतिवर्ष प्रतिव्यक्ति खपत भी बढ़ती चली जा रही है। भारत निरन्तर जल संकट की ओर बढ़ रहा है। जल विशेषज्ञों का मानना है कि आगामी 2050 तक पहुँचते – पहुँचते भारत में पानी की उपलब्ध का सवाल गंभीर रूप ले सकता है। जल के बिना जीवन सम्भव नही है। जल प्रदूषण का सर्वाधिक दुष्प्रभाव शस्य – श्यामला धरती माता झेलने वाध्य हैं। जीव – जन्तुओं की प्रजातियों के समाप्त होने का कम प्रारम्भ हो चुका है। चिड़ियों की चहचहाहट हमारे ऑगनों से गायब होती जा रही है। जागरूकता कब आयेगी ? विध्वंश की आहटे दस्तक देने लगी है। आज चिन्ता और चिन्तन का विषय यही होना चाहिये कि इस पृथ्वी को उसमें रहने वाले मानवों को कैसे बचाये रखा जाय ? क्या प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक कर ऐसी जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित नही किया जा सकता जिससे पर्यावरण का किसी भी प्रकार से क्षति न पहुँच सके ?

पृष्ठ क्रं. 2 का शेष भाग

,,

ार्मशास्त्रीय ग्रंथ और अनेकों ग्रन्थ है। जिनमें मॉ नर्मदा की महिमा का गान किया गया है। नर्मदा सरिता वरा कहा गया है नर्मदा नदियों में सर्वश्रेष्ठ है। इसके नाम पर नर्मदा पुराण की रचना हुयी है। अन्य नरियों के नाम पर पुराण कर रचना हुयी है। अन्य नदियों के नाम पर पुरण कर रचना नही हुआ नर्मदा अपने उत्गम स्थल से लेकर समुद्र पर्यन्त उत्तर एवं दक्षिण दोनों तटों में सातमील तक पृथ्वी के अंदर ही अन्दर प्रवाहित होती है । पृथ्वी के ऊपर तो वे मात्र दर्शनार्थ ही प्रवाहित है। नर्मदा ही विश्व में एक मात्र नदी है, जिसकी परिक्रमा का विधान है। अन्य नदियों की परिक्रमा का विघान का उल्लेख नही मिलता । वाल्मीकि रामायण में नर्मदा के उत्पत्ति स्थल 'अमरकंटक का उल्लेख मिलता है। वही महाकवि कालिदास ने अपने ग्रंथ 'मेघदूत' में विशेष रोचक वर्णन किया है।

❋ पवित्र ग्रंथ (कुरान) में कहागया है कि मुस्लिम महिलाओं का जो हक है, उन्हें हर हाल में मिलना चाहिये। यह विधेयक उन नौ करोड़ मुस्लिम महिलाओं के लिये जीवन दायिनी संजीवनी की तरह है, जो फौरन तलाक के खौफ में जी रहीं हैं।

दरअसल, इस कानून से उन लोगों को भी तगड़ा झटका लगा है, जो तलाक के बहाने महिलाओं को हमेशा दहशत और आतंक के साये में जीते रहने को विवश करते रहते हैं।

– एम. जे. अकबर
विदेश राज्य मंत्री

जॉच आयोग ?

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रंगनाथ मिश्र ने चर्चा के दौरान बताया था कि जॉच आयोगों पर जो खर्चे होते हैं , सब बेकार हो जाते हैं। क्योंकि उन रपटों पर बाद में कोई ध्यान नहीं दिया जाता। सिर्फ तात्कालिक स्थितियों से निपटने के लिये जॉच आयोग बना दिये जाते हैं जिसमें जनता का पैसा बर्बाद होता है। आपको बता दें कि अभी कई जॉच आयोग चल रहे हैं उन पर देश का करोडों रूपया खर्च हो गया है, आगे भी खर्च होंगे लेकिन ये पैसे क्यों और कैसे खर्च हुये इसकी जानकारी सिर्फ फाईलों में दबी पडी है और रहेगी । इन जॉच आयोगों पर हुये धन की बर्बादी की पोल खुल गयी तो आजाद भारत का सबसे बड़ा भृष्टाचार सामने आ सकता है।

विभाजनकारी तत्व एकत्रित थे

पुणे (महाराष्ट्र) में गत दिसम्बर यलगार परिषद् के तत्वावधान में एक कार्यक्रम आयोजित हुआ। ' यलगार ' उर्दू शब्द है जिसका अर्थ है– तत्काल हमला करके मार देना। कार्यक्रम के बाद जो दुःखद स्थिति उत्पन्न हुयी , वह दुनिया के सामने आगयी ।

कार्यक्रम में डॉ. आम्बेडकर के पोते प्रकाश , गुजरात के निर्दलीय कॉग्रेस समर्थित विधायक जिग्नेश मेवाणी , नक्सली नेता सोनी सोरी , दलित नेता विनय रतन सिंह , प्रशांत दौढ़ अब्दुल हामिद अजहरी , रोहित बेमुला की माँ राधिका बेमूला , जे. एन. यू. मे भारत विरोधी नारे लगाने वालों में एक खालिद सहित अनेक लोग उपस्थित थे। इनके भड़काऊ भाषण के कारण हिंसा भड़की । जिग्नेश और उमर के खिलाफ मुकदमें भी दर्ज हुये ।

सूचना

कृपया आप ~~अपना ई~~–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com